विपश्यना

[साधकों का मासिक प्रेरणापत्र]

रजि. नं. १९१५६/७१

पोस्टल रजि. नं. NSK-64

वर्ष १० • बम्बई • बुद्धवर्ष २५२४ • आश्विन पूर्णिमा [शक] • दि. २३-१०-१९८० • अंक ५

गृही आचार-संहिता

(ग)

तदनन्तर भगवानने श्रेष्ठीपुत्र सिगालको आर्य-धर्ममें छह दिशाओंकी सही पूजन-विधि सिखाई-समझाई। किस प्रकार कोई व्यक्ति दिशाओंको धर्मसे आच्छादित कर याने धर्मपूर्वक जीवन जीकर सभी दिशाओंमें अपनी सुरक्षा स्थापित करता है।

छह दिशाएँ क्या हैं?

माता-पिताको पूर्व दिशा, गुरुजनोंको दक्षिण दिशा, पुत्र-कलत्रको पश्चिम दिशा, मित्र-साथियोंको उत्तर दिशा, नौकर-चाकरोंको नीचेकी दिशा, और श्रमण-ब्राह्मणोंको ऊपरकी दिशा जाननी चाहिए

१-- माता-पिताकी सेवा।

पाँच प्रकारसे माता-पिताकी सेवा करनी चाहिए..

क) इन्होंने मेरा भरण-पोषण किया है, इसलिए मुझे इनका भरण-पोषण करना चाहिए।

ख) इन्होंने मेरे प्रति कर्तव्य पूरा किया है, मुझे भी इनके प्रति कर्तव्य पूरा करना चाहिए।

ग) इन्होंने कुल-वंश कायम रखा है, मुझे भी कुल-वंश कायम रखना चाहिए।

घ) इन्होंने मुझे दायद (विरासत) दी है। मुझे भी दायद प्रतिपादन करना चाहिए।

ङ) मृत पितरोंके पुण्यार्थ श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए।

यों पाँच प्रकारसे सेवित हो माता-पिता पुत्र पर पाँच प्रकारसे अनुकम्पा करते हैं.....

च) उसे पाप कर्मोंसे बचाते हैं।

छ) उसे पुण्य कर्मोंमें लगाते है।

ज) उसे शिल्प सिखाते हैं।

झ) योग्य जीवन-संगिनीसे उसका संबंध कराते हैं।

धम्म वाणी

मातापिता दिसा पुब्बा, आचरिया दक्खिणा दिसा।
पुत्तदारा दिसा पच्छा, मित्तामच्चा च उत्तरा ॥२१॥
दासकम्मकरा हट्ठा, उद्धं समणब्राह्मणा।
एता दिसा नमस्सेय्य, अलमत्तो कुले गिही ॥२२॥

सिगाल सुत्त/दीघनिकाय

माता-पिता पूर्व दिशा हैं, आचार्य दक्षिण दिशा; पुत्र-कलत्र पश्चिम दिशा है, मित्र-अमात्य उत्तर दिशा; दास-कर्मकर नीचली दिशा है, श्रमण-ब्राह्मण ऊपरी दिशा। कुलभूषण गृहस्थको चाहिए कि इन दिशाओंको नमस्कार करे।

ञ) समय पाकर उसे दायद निष्पादन करते हैं।

इन पाँच बातोंसे सेवित माता-पिता रूपी पूर्व-दिशा पुत्र पर पाँच प्रकारसे अनुकम्पा करती है और इस प्रकार गृहीके लिए पूर्व दिशा प्रतिच्छन्न होती है, ढंकी होती है, योग-क्षेमपूर्ण, भयरहित होती है।

२)--गुरुजनोंकी सेवा।

पाँच प्रकारसे शिष्यको आचार्यकी सेवा करनी चाहिए.....

क) तत्परतापूर्वक उठकर।

ख) आवश्यकताके समय उपस्थित रहकर।

ग) सुश्रुषा करके।

घ) परिचर्या करके।

ङ) सत्कारपूर्वक विद्या सीखकर।

यों पाँच प्रकारसे सेवित हो आचार्य शिष्य पर पाँच प्रकारसे अनुकम्पा करते हैं.....

च) उसे सुविनीत करते हैं।

छ) उसे भली प्रकार सुशिक्षा ग्रहण करनी सिखाते हैं।

ज) विद्या-शिल्प लुप्त न हो, इस योग्य पात्र द्वारा कायम रहे, इस उद्देश्यसे उसे अच्छी तरह आख्यात करते हैं।

झ) संगी-साथियोंमें उसकी प्रशंसा कर प्रोत्साहन देते हैं।

ञ) हर दिशामें सुरक्षित रह सकनेके अनुकूल उसे प्रशिक्षित करते हैं।

उपरोक्त पाँच प्रकारसे शिष्य द्वारा सेवित हो दक्षिण दिशा रूपी आचार्य पाँच प्रकारसे उसपर अनुकम्पा करते हैं और यों दक्षिण दिशा प्रतिच्छन्न, छाई हुई, ढकी, सुरक्षित, क्षेमयुक्त और भय-विहीन होती है।

३- पत्नीकी सेवा।

पाँच प्रकारसे पतिको पत्नीकी सेवा करनी चाहिए.....

क) उसका सन्मान कर।

ख) उसे अपमानित न कर।

ग) व्यभिचार न कर।

घ) उसे ऐश्वर्य-प्रभुत्व प्रदान कर।

ङ) उसे अलंकार-आभूषण प्रदान कर।

यों पाँच प्रकारसे सेवित हो पत्नी पतिपर पाँच प्रकारसे अनुकम्पा करती है...

च) गृह-संचालनके कर्तव्य भली प्रकार पूरा करती है।

छ) स्वजन-परिजन, नौकर-चाकरोंको भली प्रकार प्रसन्न-संतुष्ट रखती है।

ज) व्यभिचारिणी नहीं होती।

झ) पति द्वारा अर्जित धनकी सुरक्षा करती है।

ञ) सभी घरेलू कार्योंमें निरालस व दक्ष होती है।

यों पाँच प्रकारसे पति द्वारा सेवित होनेपर पश्चिम दिशा रूपी पत्नी पाँच प्रकारसे पतिपर अनुकम्पा करती है और यों पश्चिम दिशा प्रतिच्छन्न, छाई हुई, ढकी, सुरक्षित, भय-विहीन रहती है।

४-मित्रकी सेवा।

पाँच प्रकारसे मित्रकी सेवा करनी चाहिए.....

क) देकर।

ख) प्रिय वचन बोलकर।

ग) भलाई करके।

घ) समानताका भाव प्रकट करके।

ङ) वचन-पालन द्वारा विश्वास उत्पन्न करके।

यों पाँच प्रकारसे सेवित हो मित्र-साथी बदलेमें पाँच प्रकारसे कुल-पुत्र गृही पर अनुकम्पा करते हैं।

च) प्रमत्त हो जाय तो उसकी रक्षा करते हैं।

छ) प्रमत्त हो जाय तो उसके धनकी रक्षा करते हैं।

ज) संकटके समय उसे शरण देते हैं।

झ) विपत्तिमें उसका साथ नहीं छोड़ते।

ञ) उसके परिवारके अन्य लोगोंका भी आदर करते हैं।

यों पाँच प्रकारसे सेवित हो उत्तर दिशा रूपी मित्रसंगी बदलेमें पाँच प्रकारसे अनुकम्पा करते हैं। इस प्रकार उत्तर दिशा प्रतिच्छन्न, छाई हुई, ढकी, सुरक्षित, भय-विहीन होती है।

५-नौकरकी सेवा।

पाँच प्रकारसे मालिकको नौकर-चाकरकी सेवा करनी चाहिए

क) उसे शक्तिके अनुकूल ही काम देकर।

ख) उसे भोजन-वेतन देकर।

ग) रोगी हो जाय तो उसकी सुश्रुषा करके।

घ) उत्तम सरस भोजनमें उसे साथी बनाकर।

ङ) उसे समय पर छुट्टी देकर।

पाँच प्रकारसे सेवित होकर सेवक पाँच प्रकारसे मालिक पर अनुकम्पा करते हैं...

च) मालिकसे पहले उठने वाले होते हैं।

छ) पीछे सोने वाले होते हैं।

ज) चोरी नहीं करते। दिया ही लेते हैं।

झ) काम अच्छी प्रकार करने वाले होते हैं।

ञ) यश-कीर्ति फैलानेवाले होते हैं।

यों पाँच प्रकारसे सेवित हो निचली दिशारूपी सेवक मालिक पर पाँच प्रकारसे अनुकम्पा करते हैं। इस प्रकार निचली दिशा प्रतिच्छन्न, छाई हुई, ढकी, सुरक्षित, क्षेमपूर्ण, भय-विहीन रहती है।

६- श्रमण-ब्राह्मणकी सेवा

पाँच प्रकारसे कुलपुत्रको श्रमण-ब्राह्मणकी सेवा करनी चाहिए...

क) मैत्रीभावपूर्ण शारीरिक कर्मसे।

ख) मैत्री भावपूर्ण वाचिक कर्म से।

ग) मैत्रीभावपूर्ण मानसिक कर्म से।

घ) खुले दिलसे अगवानी करके।

न) लोकीय आवश्यकताओंकी पूर्ति करके।

पाँच प्रकारसे सेवित श्रमण-ब्राह्मण छह प्रकारसे कुलपुत्रों पर अनुकम्पा करते हैं।

च) पाप कर्मोंसे बचाते हैं।

छ) कुशल कर्मोंमें लगाते हैं।

ज) कल्याण चाहते हुए अनुकम्पा करते हैं।

झ) अश्रुत धर्म सुनाते हैं।

ञ) श्रुत धर्मका शोधनकर पुष्ट करते हैं।

ट) सद्गतिका रास्ता बताते हैं।

यों पाँच प्रकारसे सेवित ऊपर दिशारूपी श्रमण-ब्राह्मण संत छह प्रकारसे सद्गृहस्थपर अनुकम्पा करते हैं और इस प्रकार ऊपरकी दिशा प्रतिच्छन्न, छाई हुई, ढकी, सुरक्षित क्षेमपूर्ण भय-विहीन होती है।

सद्गृहस्थ सद्धर्मकी आचार-संहिताको धारणकर इस प्रकार छहों दिशाओंसे भयमुक्त होता है।

भगवानका यह मंगल उपदेश सुनकर श्रेष्ठीपुत्र सिगाल निहाल हुआ। परंपरासे जड़ीभूत हुई निष्प्राण रूढ़ियोंसे मुक्ति पाकर सद्धर्मके जीवंत व्यवहार-पथ पर चलकर अपना इहलोक और परलोक दोनों सुधार सका।

आओ! गृही साधकों! हम भी इसी प्रकार इस मंगलमयी गृही आचार-संहिताको धारण कर अपना इहलोक और परलोक दोनों सुधारें और सही मानेमें मंगल-लाभी हों।

मंगल मित्र,
स. ना गो.

(गतांक से आगे)

पण्डितो सीलसम्पन्नो, सण्हो च पटिभानवा।
निवातवुत्ति अत्थद्धो, तादिसो लभते यसं ॥२३॥

बुद्धिसंपन्न, शीलसंपन्न, स्नेहसंपन्न, इस नमस्कारकी विद्यामें निपुण, प्रतिभासंपन्न, विनीत और कल्याणमार्गी व्यक्ति यशलाभी होता है।

उट्ठानको अनलसो, आपदासु न वेधति।
अच्छिन्नवुत्ति मेधावी, तादिसो लभते यसं ॥२४॥

उद्योगी, निरालस, विपत्तिमें अविचलित, निर्दोष वृत्तिवाला, मेधावी व्यक्ति यशलाभी होता है।

संगाहको मित्तकरो, वदञ्ञू वीतमच्छरो।
नेता विनेता अनुनेता, तादिसो लभते यसं ॥२५॥

जो मित्र-संग्राहक है, मित्रता करना जानता है, वाणी कुशल है, मात्सर्यहीन उदारचेता है, नेतृवान अग्रणी नेता है, अनुयायियोंको विनीत बना सकनेमें कुशल विनेता है, अनुनय द्वारा समझा सकनेमें कुशल अनुनेता है, वह यशलाभी होता है।

दानं च पियवज्जं च, अत्थचरिया च या इध।
समानत्तता च धम्मेसु, तत्थ तत्थ यथारहं ॥२६॥
एते खो संगहा लोके, रथस्साणीव यायतो।
एते च संगहा नास्सु, न माता पुत्तकारणा।
लभेथ मानं पूजं वा, पिता वा पुत्तकारणा ॥२७॥

यहाँ यह जो दान, प्रिय भाषण, कल्याणचर्या और जहाँ-जहाँ, जिस-जिससे यथा आवश्यक समानताका व्यवहार है; ये लोक-संग्रह है। मानो रथके चक्केकी धुरी (नाभी) हो, जिससे लोक-चक्र चलता है। यदि ये लोक-संग्रह न हों तो न माता पुत्रसे सम्मान पाए और न ही पिता पुत्रसे।

यस्मा च संगहे एते, समवेक्खन्ति पण्डिता।
तस्मा महत्तं पप्पोन्ति, पासंसा च भवन्तिते 'ति ॥२८॥

चूंकि बुद्धिमान लोग इन लोक-संग्राहक सद्गुणोंको उचित महत्व देते है, इसीलिए वे महत्ता प्राप्त करते है, प्रशंसा प्राप्त करते हैं।

सिगाल सुत्त दीघनिकाय

बर्मा में भिक्षु-शिविर

प्रसन्नताकी बात है कि इस वर्ष "अन्तर्राष्ट्रीय साधना केन्द्र" रंगून, बरमा में पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की दसवीं पुण्यतिथि के अवसरपर आगामी १ जनवरी १९८१ से २० जनवरी १९८१ तक लगातार शिविरोंका विशेष कार्यक्रम निश्चित हुआ है जिसमें कि पुराने साधक भिक्षु बनकर अथवा गृहस्थरुप में भी साधना कर पाने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे। बर्मा सरकार से अब इक्कीस दिन का वीसा प्राप्त हो सकता है अतः भारतसे भी कोई इच्छुक साधक शिविरकी अवधि पर्यन्त भिक्षु बनकर अथवा गृहस्थरुप में भी साधना किया चाहे तो इस अवसरका लाभ उठा सकता है। सूचनार्थ।

आगामी शिविर

१. इगतपूरी

लघु शिविर : दि. २३-१०-८० से २६-१०-८० तक (केवल पुराने साधकोंके लिए)
शिविर क्रमांक १८८ : दि. १०-१२-८० से २१-१२-८० तक (हिन्दी)
,, ,, १८९ : दि. २१-१२-८० से १- १-८० तक (अंग्रेजी)
लघु शिविर : दि. १- १-८१ से ४- १-८१ तक (केवल पुराने साधकोंके लिए)
शिविर क्रमांक १९० : दि. ७- १-८१ से १८- १-८१ तक (हिन्दी)
,, ,, १९२ : दि. १५- २-८१ से २६- २-८१ तक (अंग्रेजी)
दीर्घ शिविर १) * दि. १०-१२-८० से ७- १-८१ तक
२) * दि. २१-१२-८० से १८- १-८१ तक

* इन दीर्घ शिविरों में केवल कुछ पुराने साधक प्रवेश पा सकेंगे जिनका चयन पूज्य गुरुजी स्वयं करेंगे। अतः साधकों को तुरन्त प्रार्थना-पत्र निम्न पते पर भेज देने चाहिएं।

संपर्क : व्यवस्थापक, विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि, इगतपुरी ४२२ ४०३ नासिक (महाराष्ट्र). फो. नं.--७६.

आगामी शिविर

२. जयपुर

शिविर क्रमांक : १८६ जयपुर (विपश्यना केंद्र गल्ताजी रोड) ता. ११-११-८० से २२-११-८० तक (हिन्दी)।
शिविर क्रमांक : १८७ ,, ,, ता. २६-११-८० से ७-१२-८० तक (हिन्दी)।
लघु शिविर : ,, ,, ता. २२-११-८० से २६-११-८० तक (केवल पुराने साधकों के लिए)।
दीर्घ शिविर : ,, ,, ता. ११-११-८० से ७-१२-८० तक। (इस दीर्घ शिविर में साधकों का प्रवेश पू. गुरुजी के विशेष अनुमोदन से ही हो सकेगा, अतः इच्छुक साधक इसके लिए प्रार्थना पत्र इगतपुरी के कार्यालय में ही यथा शीघ्र भेजें।)
संपर्क : श्री श्याम सुंदर मूंदडा, जी/१, ए. अशोक मार्ग, जयपुर फो. नं. ६३३२२ (निवास) ६५४१४ (कार्यालय) तार : डोली

३. हैदराबाद

शिविर क्रमांक १९१ हैदराबाद दि. २-२-८१ से १३-२-८१ तक (हिन्दी)
संपर्क : श्री. पूरनमल अग्रवाल, द्वारा – होटल राजधानी, सिदिअम्बर बाजार हैदराबाद-५०० ०१२ (आं. प्र.) फोन – ५७५७१.

फोन : २९८७१३ निवास-५६८९०१
मेसर्स ब्रह्म भारती उद्योग
ग्रीन हाउस, २ रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट,
बम्बई-४०० ०२३.
की मंगल कामनाओं सहित

फोन : २५३६३७ निवास : ८१२७०८
मेसर्स परमानेंट मैगनेट्स लि.,
२०, शहीद भगतसिंह मार्ग, फोर्ट,
बम्बई-४०० ०२३.
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सेवा बापू मांय की, सुखदायी ही होय।
आसीसां री झड़ लगै, उत्तम मंगल होय॥
गुरूजनरा पग पूजणा, सुभ फलदायी होय।
उत्तम विद्या-धन मिलै, उत्तम मंगल होय॥
पत्नी रो पालण करै, घर सुख संपद होय।
सांति रवै परिवार मंह, उत्तम मंगल होय॥
मिंतर रो आदर कर्‌यां, सुख-दुख संगी होय।
संकट मंह स्हारो मिलै, उत्तम मंगल होय॥
चाकर पर नेहो रयां, सामधरम युत होय।
करै चाकरी चाव सूं, उत्तम मंगल होय॥
संता की सेवा कर्‌यां, धरम उजागर होय।
लोक और परलोक मंह, उत्तम मंगल होय॥

दोहे धर्म के

मत दुर्जन का संग कर, दुर्जन दुखकर होय।
पुण्य कर्म क्षय क्षीण हों, पाप प्रपंचित होय॥
सत् संगत मंगल करण, सत् संगत सुख मूल।
सत् संगत जागे धरम, उखड़े पाप समूल॥
मात पिता की वन्दना, गुरूजन का सत्कार।
समता होवे मित्र से, पत्नी से हो प्यार॥
रहें भृत्य संतुष्ट सब, हो सन्तों का मान।
ऐसे सुखी गृहस्थ का, घर हो स्वर्ग समान॥
घर घर में परिवार में, बहे धर्म की धार।
रूखे सूखे गृह चमन, हो जावें गुलजार॥
जगे प्यार ही सर्वदा, रोम रोम लहराय।
जागे गंगा धरम की, द्वेष द्रोह बह जाय॥

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक : **रामप्रताप यादव**, ग्रीन हाऊस, २ री मंजिल, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई २३. टेलीफोन : ३१३५१०. ● मुद्रण स्थान : अक्षरचित्र मुद्रणालय, सातपुर, नासिक ४२२ ००७. टेलिफोन ८८२५१ ●
पत्रिका में विज्ञापन दर : आधा पृष्ठ रू. ५००/-, चौथाई पृष्ठ रू. २५० /- ● वार्षिक शुल्क रू. ५/-, आजीवन शुल्क रू. ५१/-

विपश्यना"
पो. रजि. नं. NSK-64

Licence No. NS 18
Licensed to post without pre-payment

प्रेषक :
सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट
विपश्यना विश्व विद्यापीठ
धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०३.
(नासिक, महाराष्ट्र)

To